ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

वैश्वीकरण तथा अध्यापक शिक्षा

प्रियंका सिंह*

मानव सभ्यता के तीव्र विकास के साथ–साथ वर्तमान समय मे विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न देशों को परस्पर निर्भर बना दिया है। वैश्वीकरण (अर्थात ग्लोबलाईजेशन) स्वयं की अर्थव्यवस्था, संस्कृति, समुदाय आदि को विश्व समुदाय के लिए खोलना अथवा विश्व के अन्य देशों के साथ जोड़ना है। वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा संसार की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं व समाज का समन्वय किया जाता है जिससे वस्तुओं व सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, पूंजी निवेश, शिक्षा, सांस्कृतिक आदान–प्रदान आदि का इनके बीच आपसी प्रवाह हो सके। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में विकास एवं प्रतिस्पर्धा साथ–साथ चलती है। आज हम देखते हैं कि शिक्षा का भी वैश्वीकरण हुआ है। राष्ट्र विकास की प्रक्रिया में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। शिक्षा को हम सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक रूपांतरण का साधन भी मानते हैं। समाज बदलता रहता है और आने वाला युग शिक्षा के द्वारा ही बदलता है। हम जैसी शिक्षा देंगे, वैसा ही मनुष्य बनेगा और मनुष्य के विकास से राष्ट्र का विकास होता है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा का संबंध राष्ट्र के जीवन, आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं से हो, वैश्विक स्तर पर हमारे मानक हों एवं जनशक्ति की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए जाएं।

आज हमारे देश को तीव्र गतिशील एवं परिवर्तनशील भौतिक, आर्थिक व सामाजिक पर्यावरण के साथ प्रभावी सामनजस्य बनाना आवश्यक हो गया है। देश की भावी युवा पीढ़ी को वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना करने व उसके योग्य बनने हेतु सामाजिक परिवर्तन के एक सक्रिय अभिकर्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका एवं महत्व पहले से अधिक बढ़ गया है। शिक्षक को शिक्षण व्यवसाय एवं अपने विषय से सम्बन्धित नवीनतम जानकारियाँ,

* एम0ए0, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

विधियाँ, कौशलों, अभिवृत्तियों आदि को अद्यतन रखना होगा। प्रस्तुत प्रसंग में यह बताया गया है कि किस प्रकार वैश्वीकरण ने शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के साथ–साथ अध्यापक शिक्षा को भी प्रभावित करता है

शब्द संक्षेप:

वैश्वीकरण, वैश्वीकरण और शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और वैश्वीकरण, अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन के लिए अध्ययन से प्राप्त सुझाव, निष्कर्ष, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

वैश्वीकरण :

वैश्वीकरण एक घटना है जो पूरी दुनिया को प्रभावित किया गया है और इसलिए भारत की शिक्षा प्रणाली है। एक प्रमुख परिवर्तन संरचना स्वरूप और स्कूलों में अध्यापन की शैली और भारत के कालेजों में देखा जा सकता है। शिक्षकों और प्रोफेसरों इन संस्थानों में खुद को समाज के नवीनतम शिक्षण प्रवृत्तियों के बारे में अद्यतन और नवीनतम तकनीकों और बाहरी दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा करने के तरीके जाने छात्रों बनाने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। वैश्वीकरण के शिक्षा के क्षेत्र में भी छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धा में वृद्धि करने के लिए नेतृत्व किया है। देश में विदेशी छात्रों के प्रवेश के साथ यह अधिक छात्रों को उनके कौशल अक्सर अद्यतन और अपने ज्ञान के साथ दुनिया को हरा के लिए महत्वपूर्ण बन गया है।

भूमण्डलीकरण को परिभाषित करते हुए, आर. **राबर्टसन (1992)** ने कहा, वैश्वीकरण को विश्व के संपीडन एवं चेतना की गहनता के रूप में संदर्भित किया जा सकता हैं। **वाटर्स (1995)** में माना की वैश्वीकरण वह प्रक्रिया हैं जिसने सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों के बीच की भौतिक दूरी का कम किया हैं। **इण्डा और रोलाल्डो के अनुसार** भूमण्डलीकरण एक जटिल प्रक्रिया हैं इसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के माध्यम से विश्व अत्याधिक अन्तर्सम्बन्धित हो रहा है। भूमण्डलीकरण का अभियान पूँजीवाद को राष्ट्रीय दायरों से परे ले जाने की अभिलाषा की अभिव्यक्ति है। **टायनबी मानते हैं,** भूमण्डलीकरण में विकसित

व विकासशील देश मिलकर अपनी–अपनी अर्थव्यवस्थाओं को एकीकृत करने की चेष्टा करते हैं। इसने एक परिदृश्य की कल्पना की हैं जिसमें एक देश स्वयं का शेष विश्व के साथ मुक्त भाव से जोड़ने का प्रयास करता है।

वैश्वीकरण के प्रभुत्व कारक है–

1. फाइबर आप्टिक्स, उपग्रह और कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के माध्यम से वैश्विक संचार बढ़ाने से।
2. एकीकृत और समन्वित उत्पाद डिजाइन, उत्पादन, बिक्री, बहुराष्ट्रीय संगठन।
3. अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त व्यापार समझौतों की संख्या बढ़ाने से
4. व्यापार, वित्त, काम, उत्पाद के लिए नियमों और मानकों की उन्नति।
5. कई देशों में विदेशी निवेश की संख्या बढ़ाने और प्रभाव में वृद्धि कार्य कर्त्ताओं पर विदेशी नियन्त्रण।

वैश्वीकरण और शिक्षा :

वैश्वीकरण एक घटना है जो पूरी दुनिया को प्रभावित किया गया है और इसलिए भारत की शिक्षा प्रणाली है। एक प्रमुख परिवर्तन संरचना स्वरूप और स्कूलों में अध्यापन की शैली और भारत के कालेजों में देखा जा सकता है। शिक्षकों और प्रोफेसरों इन संस्थानों में खुद को समाज के नवीनतम शिक्षण प्रवृत्तियों के बारे में अद्यतन और नवीनतम तकनीकों और बाहरी दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा करने के तरीके जाने छात्रों बनाने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। वैश्वीकरण के शिक्षा के क्षेत्र में भी छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धा में वृद्धि करने के लिए नेतृत्व किया है। देश में विदेशी छात्रों के प्रवेश के साथ यह अधिक छात्रों को उनके कौशल अक्सर अद्यतन और अपने ज्ञान के साथ दुनिया को हरा के लिए महत्वपूर्ण बन गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में उदारीकरण, निजीकरण, तथा भूमण्डलीकरण की अवधारणाएँ नए वैश्विक नारों के रूप में बनकर उभरी हैं। यह तथ्य सर्वविदित हैं कि आर्थिक, सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह

करने के कारण शिक्षा सभी स्तरों पर अत्याधिक महत्वपूर्ण है और दूसरी तरफ वैश्वीकरण तकनीकी और त्वरित उत्पादकता को बढ़ाने तथा तेज विकास को सुनिश्चित करता है। इस प्रकार यह बात साफ तौर स्पष्ट है कि शिक्षा पर वैश्वीकरण का प्रभावशाली प्रभाव है। ज्ञान आधारित समाज तथा अर्थव्यवस्था के कारण वर्तमान में शिक्षा में नए ही तरह के दबाव महसूस किए जा रहे हैं। अब शिक्षा को विद्यार्थियों को ऐसे कार्य बाजार के लिए तैयार करना हैं जिसमें उसे अनेक बार कार्य क्षेत्र बदलने की उपेक्षा की जा सकें। शैक्षिणिक मुद्दों के साथ वैश्वीकरण सौदों के बारे में बातचीत का एक अन्य प्रकार है जिसमें शिक्षण के साथ ही सीखने की प्रक्रिया शामिल है। मुद्दों की वैश्विक प्रकृति की समझ के साथ छात्रों के ज्ञान प्रदान करना जैसे– स्वास्थ्य और पर्यावरण के अन्य संस्कृतियों, भाषाओं व इतिहास का ज्ञान साथ ही अलग–अलग संस्कृतियों के माहौल में कार्य करने को तैयार करना। शिक्षण और छात्र गतिशीलता, संकाय विकास पुरस्कार या शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ सहयोग। इण्टरनेट से अब दूरी का सवाल समाप्त हो गया है। उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में, वैश्वीकरण के कई अर्थ हैं। वैश्विक शब्द शामिल करने का अर्थ है विश्व स्तर पर सक्षम स्नातकों का तैयार करना जबकि कुछ के लिए इसका अर्थ अन्तर्राष्ट्रीयकरण हैं, राष्ट्रीयता के सीमाओं के पार जाना। निम्नलिखित सबूत हैं, जो शैक्षिक क्षेत्र में वैश्वीकरण को बताने हैं –

1. अध्ययन के लिए विदेश जाने वाले छात्रों की संख्या का बढ़ना।
2. संकाय और शेधकर्त्ताओं के बीच आदान–प्रदान कार्यक्रम।
3. शाखा परिसरों में वृद्धि।
4. अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक पाठ्यक्रम में बदलाव।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि यदि आज भारत विश्व में तेजी से आगे बढ़ रहा है तो उसका एक कारण यह भी है कि हम दूसरे देशों से उन्हीं की भाषा में संवाद कर सकते हैं। विदेशों में विशेषकर अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा आदि विदेशी भाषा भाषी देशों में

भारतीयों को विदेशी भाषा के ज्ञान का लाभ अवश्य मिला है। भारतीयों को इन देशों में उच्च शिक्षा में प्रवेश, तकनीकी संस्थानों में नौकरियाँ आदि मिलने में भाषा का माध्यम सहायक हुआ है। भारत में वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण छात्र ज्ञान की खोज में अनेक नवीन शिक्षण विधियों एवं प्रयोगों का सहारा ले रहे हैं। अभिक्रमित अनुदेशन, कम्प्यूटरीकृत अनुदेशन, इन्टरनेट आदि अनेक नवीन विधियाँ छात्र के लिए प्रस्तुत है। इन्टरनेट के माध्यम से छात्र विभिन्न पुस्तकालयों व अनेक पुस्तकों से स्वयं ही पढ़ सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा व उसकी सहायक अध्ययन सामग्री भी छात्र को ज्ञान प्राप्ति में सहायता देती है। इस प्रकार छात्र स्वयं ज्ञान की खोज करता है तथा एकीकरण व अपने अनुभवों व क्रियाओं द्वारा सीखता है जो कि शिक्षा में वैश्वीकरण की आवश्यक शर्त है। इस प्रकार भारत में शिक्षा पर वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण अनेक परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं जिनमें पाठ्यक्रम का नवीनीकरण, विषय विशेषज्ञों का आदान–प्रदान, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों का आपस में सहयोग, मीडिया व सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतर प्रयोग, ज्ञान का नवीनीकरण, नये के साथ पुराने का समन्वय करके समस्या का समाधान प्रस्तुत करना आदि प्रमुख है। भूमण्डलीयकरण के फलस्वरूप देशों की उच्च शिक्षा में परिवर्तन आ गया हैं अब शिक्षा अभिजात्य वर्ग से आम व्यक्ति के स्तर तक पहुँच चुकी है, अर्थात् उसका स्तर सार्वभौमिक रूप ले चुकी है। इसके परिणामस्वरूप उच्च शिक्षा की माँग दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। देश से बाहर शिक्षा प्राप्त करने की प्रवृत्ति विकसित हो चुकी है। वर्तमान में उच्च शिक्षा की इस माँग को पूरा करने हेतु निजी शिक्षा संस्थाओं की स्थापना हुई है। इन उच्च शिक्षा संस्थाओं में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा प्रदान की जा रही है। साथ ही नवीन प्रकार के सूचना व सम्प्रेषण तकनीकों के प्रयोग के कारण शिक्षा, प्रणाली में राष्ट्रीय सीमा का बधन समाप्त हो गया है। जिसके परिणामस्वरूप गुणवत्ता सुनिश्चय, ग्राहक सुरक्षा, बौद्धिक सम्पदा अधिकार, सांस्कृतिक अनुरक्षण आदि जैसे तथ्य उभर कर आये।

अध्यापक शिक्षा:

हम जानते है कि शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसे किसी कौशल या कार्य के निष्पादन तक सीमित नहीं किया जा सकता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति में निहित आन्तरिक क्षमताओं का विकास समग्र रूप से करने के साथ ही वैयक्तिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय दृष्टि या सन्दर्भ में उपयोगी तथा संसाधन सम्पन्न व्यक्तित्व के निर्माण के लिए प्रयत्न किया जाता है। मात्र शिक्षा के माध्यम से ही ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर पाना सम्भव है जो वातावरण एव मूल्यों के संरक्षण के साथ ही अनुकूल परिवेश के निर्माण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। व्यक्ति में मानवता बोध एवं सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है, प्रशिक्षण या अन्य सम्प्रेषण व्यवहार के माध्यम से नहीं।

अतः इस व्यापक सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है जिसमें विभिन्न स्तरीय एवं वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने के लिए प्रयत्न किया जाता है कि अग्रिम प्रजन्म को ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तान्तरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में वे सक्षम हो सके तथा उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन सम्पन्नता तथा नवाचारिकता के साथ सांस्कृतिक उद्दीपना एवं मानवता वैध का समन्वयात्मक विकास करना सम्भव हो सके। शिक्षण को एक प्रोफेशन के रूप में स्वीकार करने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि अध्यापक शिक्षा वह आयोजन हो जिसमें इस उद्यमगत नीति बोध एवं संवेगात्मक पक्ष में भी दक्षता प्रदान करने की व्यवस्था हो इस हेतु सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं समस्त चारित्रिक मर्यादाओं के साथ ही राष्ट्रीय प्रजातान्त्रिक मूल्यों को विकसित करने के लिए सफल प्रयास करना इस आयोजन का लक्ष्य होगा।

इस प्रकार अध्यापक शिक्षा मात्र एक कार्यक्रम ही नहीं है बल्कि एक ऐसा मिशन या आयोजन है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय सन्दर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका के निर्वहन के लिए दक्षता तथा कुशलता प्राप्ति

हेतु व्यक्तियों को शिक्षित किया जा सके। संक्षेप में कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा, अध्यापकों के लिए शिक्षा आयोजन है।

अध्यापक शिक्षा और वैश्वीकरण :

शिक्षा के तीन महत्वपूर्ण घटक हैं – अध्यापक, छात्र व पाठ्यक्रम। इस तरह राष्ट्र निर्माण में अध्यापक की भूमिका स्वतः ही महत्वपूर्ण बन जाती है। बदलते हुए राष्ट्रीय परिदृश्य के संदर्भ में आज शिक्षक–शिक्षा की मुख्य चिंताएं– उसकी गुणवत्ता, समुचित ज्ञानाधार का सृजन और उत्तरदायित्व की वृद्धि है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 ने माना है कि शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को निर्धरित करने वाले कारकों में निःसंदेह शिक्षकों का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षण में सूचना व संप्रेषण साधनों का प्रयोग, इंटरनेट क्रांति, बच्चों पर पढ़ाई का मानसिक दबाव, अध्यापक शिक्षा का निजीकरण, शांति की शिक्षा कुछ इसी तरह के अन्य सवालों ने आज भारत में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान देने के लिए दबाव डाला है।

भारत में शिक्षक–शिक्षा के विकास की प्रक्रिया पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि अलग–अलग रूपों और संरचनाओं के द्वारा यह न सिर्फ सतत विकास की ओर अग्रसर होती रही, बल्कि बदलते समय के साथ इसने अपने आपको ढालने की कोशिश भी की है। भारत में शिक्षण के क्षेत्र की बढ़ती हुई आवश्यकता, शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम से प्राप्त अनुभव और तत्संबंदी जरूरतों का आधार, इन सभी ने मिलकर शिक्षक–शिक्षा की पद्धति, स्वरूप, विषय वस्तु और संरचना को प्रभावी ढंग से संचालित करने वाले मुद्दों पर विचार करने की आवश्यकता को और पैना कर दिया है। भारत के संविधान में एक ऐसे न्यायपूर्ण, समानता और भाईचारे की भावना से युक्त समाज की परिकल्पना की गई है, जिसमें व्यक्ति की गरिमा तथा राष्ट्र की एकता और अखंडता के प्रति आश्वस्त हुआ जा सके। आज विश्व में घटी किसी भी घटना का हर व्यक्ति पर प्रभाव नजर आता है। आज मानव एक वैश्विक मानव बन गया है। शिक्षा के उद्देश्य राष्ट्रीय उद्देश्यों के साथ वैश्विक संदर्भ को भी

ध्यान में रखकर बनाने चाहिए। आज सूचना तकनीकी व संप्रेषण साधनों से ज्ञान का विस्तार चारों ओर हो गया है। भारत में शिक्षक–शिक्षा में आजादी के बाद कोई बड़ा परिवर्तन नजर नहीं आता है। आज शिक्षक–शिक्षा अपने पुराने परिपाटी नियमों पर नहीं चल सकती है। आज विश्व में आतंकवाद की समस्या चारों ओर घर कर गई है। पर्यावरण प्रदूषण, आर्थिक असमानता, अमीरी–गरीबी का बढ़ता दायरा, आर्थिक असंतोष, ग्लोबल वार्मिंग, शहरीकरण की बढ़ती समस्याएं, संबंध सांप्रदायिकता के बदलते स्वरूप, बढ़ती जनसंख्या इत्यादि ऐसी समस्याएं हैं जिनका स्वरूप वैश्विक है। अध्यापक शिक्षा केवल राष्ट्रीय समस्याओं को ही नहीं बल्कि वैश्विक समस्याओं को भी ध्यान में रखकर अपने उद्देश्य निर्धारित करे तो विद्यार्थी की एक वैश्विक संचेतना बन सकेगी। समय के साथ शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले विकास के कारण और विश्व समाज में हो रहे बदलाव का शिक्षक–शिक्षा पर भारत में गहरा प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षक की भूमिका व उसकी अपेक्षाओं तथा शिक्षा में आये बदलाव के मद्देनजर शिक्षक–शिक्षा की प्रासंगिकता बढ़ गई है।

आज विश्व में शिक्षा व शिक्षक–शिक्षा के क्षेत्र में हुए बदलावों और दूसरी तरफ सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक क्षेत्र के दबावों से इसके स्वरूप में परिवर्तन जरूरी है। इंटरनेट क्रांति व कंप्यूटरीकरण से शिक्षण में तीव्र परिवर्तन आ रहे हैं। शिक्षण के तरीकों में सूचना व संप्रेषण तकनीकी से बदलाव आया है। आज किसी भी देश के विकास में सूचना तकनीकी का अहम स्थान है इसलिए अध्यापक शिक्षा को भी अपने आपको बदलते सांचे में ढालना होगा। आज शिक्षा को वैश्विक संदर्भ में केवल ज्ञान प्रदान करने या केवल गढ़ी–गढ़ाई वस्तु उत्पन्न कर देने से संबंधित नहीं माना जाता बल्कि उसे जिज्ञासा उत्पन्न करने, उचित रुचि, प्रवृत्तियों और मूल्यों को विकसित करने तथा स्वतंत्र अध्ययन एवं चिंतन करने के लिए आवश्यक कौशल निर्मित करने एवं स्वयं निर्णय लेने से संबंधित माना जाता है। अध्यापक शिक्षा को इस पूरे संदर्भ को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रक्रिया अपनानी जरूरी है।

अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन के लिए अध्ययन से प्राप्त सुझाव :

1. अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अभ्यर्थी के चयन के संबंध में सही मानदंड बनाने चाहिए। उन्हीं अभ्यर्थियों का चयन हो जो वास्तव में शिक्षण–योग्यता रखते हों, अपने विषय का पूर्ण ज्ञान एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक व प्रभावी दृष्टिकोण रखते हों। चयन में शिक्षण अभिक्षमता, विषय की समझ, बच्चे की समझ, समस्याओं पर दृष्टिकोण, बुद्धि मापन परीक्षा, अभिवृत्ति, अभिरुचि, भाषा संबंधी प्रवीणता, अनुक्रियात्मकता की जांच–परीक्षण किया जाना चाहिए। चयन के मानदंड प्राथमिक शिक्षक, माध्यमिक शिक्षक, उच्च माध्यमिक शिक्षक, विशिष्ट शिक्षक, विषय के शिक्षक इत्यादि के आधार पर हो।
2. वर्तमान में शिक्षा की पद्धति व उसकी प्रक्रिया में बहुत त्वरित परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार भविष्य आधारित पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या होनी चाहिए। नई समस्याएं, चुनौतियां और सही दृष्टिकोण को तुरंत पाठ्यचर्या में शामिल करने के प्रावधान होने चाहिए। स्कूल पाठ्यचर्या में परिवर्तन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कुछ अधिगम क्षेत्रों को अध्यापक–शिक्षा में शामिल करना पड़ेगा जो कि सूचना संप्रेषण तकनीकी के नये विकास, हाल ही की स्वास्थ्य समस्याएं, उर्जा और वातावरण, मानव अधिकार शिक्षा, आपदा प्रबंधन, शांति की शिक्षा, आतंकवाद की समस्या, भारतीय संविधान की मूलभूत शिक्षा हो सकते हैं। सेवापूर्व शिक्षा की पाठ्यचर्या में उदीयमान भारत में शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान, सक्ष्य मूल्यांकन व प्रबंध, कक्षा–प्रबंध, शिक्षण प्रवृत्ति व विधि इत्यादि विषयों में भी इसे हम शामिल कर सकते हैं। विशेष क्षेत्रों के विषय, परामर्श व निर्देशन, कंप्यूटर शिक्षा, शैक्षिक तकनीकी और स्वास्थ्य शिक्षा इत्यादि में भी हम समसामयिक

आवश्यकताओं को शामिल कर सकते हैं। स्कूल की समस्याओं व शिक्षक–शिक्षा की पाठ्यचर्या में संबंध होना जरूरी है। इसलिए बड़े अंतराल के बाद शिक्षक–शिक्षा की पाठ्यचर्या में परिवर्तन नहीं हो, बल्कि समय–समय पर इसे अद्यतन बनाना चाहिए।

3. शिक्षक शिक्षा में प्रयोगात्मक और सैद्धांतिक विषयों का मेलजोल होना चाहिए। सैद्धांतिक विषय प्रयोगात्मक कार्यों के अनुसार हो और प्रयोगात्मक कार्य सैद्धांतिक विषयों के अनुसार होने चाहिए। दोनों एक–दूसरे का अनुवर्तन करें। प्रयोगात्मक कार्य स्कूली अनुभव, स्कूल की प्रशासनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, क्षेत्रीय, अधिगमकर्ता की विशिष्टताएं व समस्याओं, विषय की जटिलता, अधिगम सिद्धांतों का प्रयोग, श्रव्य–दृश्य सामग्री का स्कूल में प्रयोग, सूचना–तकनीकी का स्कूली वातावरण में इस्तेमाल इत्यादि पर होने चाहिए। प्रयोगात्मक कार्यों में स्कूली जीवन का वास्तविक आईना दिखना चाहिए। सैद्धांतिक पाठ्यक्रमों को भी स्कूली जीवन के अनुभव के आधार पर बनाना चाहिए। दत्त कार्यों का समय पर मूल्यांकन करके सुझाव छात्रा–अध्यापकों को देने चाहिए।
4. अध्यापक शिक्षा कार्यों में मूल्यांकन के लिए नवाचारी ढंगों को अपनाना जरूरी है। मूल्यांकन क्षमता व दक्षता आधारित होना चाहिए। आंतरिक मूल्यांकन के लिए विषयक प्रस्तुतीकरण, दत्त कार्य, कक्षा में विचार–विमर्श में सहभागिता, सप्ताह या माहवार संक्षिप्त परीक्षा, सांस्कृतिक कार्यों में सहभागिता, शिक्षण छात्राध्यापकों द्वारा नवाचारी ढंगों का प्रयोग, शैक्षिक भ्रमण, अध्यापक व्यक्तिव विकास इत्यादि के द्वारा कर सकते हैं। सत्रांत परीक्षा में प्रश्न–पत्रों का आधार स्कूली जीवन के आधार पर होना चाहिए, जिसमें विद्यार्थी अपना दृष्टिकोण रख सकें। अध्यापक–शिक्षा में मूल्यांकन एक लगातार प्रक्रिया की तरह हो, लेकिन वह बिल्कुल पारदर्शी होनी चाहिए।

5. अध्यापक शिक्षा के निजीकरण से इस अनुशासन का बहुत ज्यादा स्तर गिरा है। निजी संस्थान व्यावसायिक लाभ के हिसाब से शिक्षा उपलब्ध करवाते हैं। इसलिए NCTE व शिक्षा प्राधिकार संस्थाओं को स्ववित्त पोषित संस्थाओं की गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए। ऐसा पाया गया है कि अपने निजी मकान में भी बी.एड. संस्थान चल रहे हैं, जो कि सोचनीय है।
6. स्ववित्त पोषित संस्थानों में प्रायोगिक कक्ष, मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला, खेल का मैदान, कार्यानुभव कक्ष, अभ्यास शिक्षण की स्कूलों में व्यवस्था, दृश्य–श्रव्य सामग्री, अच्छी पुस्तकें व संदर्भ ग्रंथों का पुस्तकालय, शिक्षण विधियों के कक्ष इत्यादि उपलब्ध हो शिक्षक–शिक्षा के मानक व मानदंडों पर तभी इन्हें मान्यता देनी चाहिए। स्ववित्त पोषित संस्थानों में अध्यापक प्रशिक्षकों को उचित वेतनमान भी नहीं मिलता है। अध्यापक नियुक्ति के तरह–तरह के हथकंडे अपनाये जाते हैं। इसलिए अध्यापक शिक्षक–शिक्षा संस्थानों में हमेशा मानसिक दबाव में रहता है। यह जरूरी हो जाता है कि उचित प्राधिकार सत्ता इन संस्थानों में नियुक्ति के मानदंडों व अध्यापकों की योग्यता पर पैनी नज़र रखे। निजी संस्थानों में समय पर परीक्षा, दाखिला, शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए जरूरी तय समय में होना चाहिए। छात्र–अध्यापकों की इसमें उपस्थिति को अनिवार्य बनाना जरूरी है।
7. अध्यापक शिक्षा एक सतत प्रक्रिया बनी रहनी चाहिए। सेवापूर्व शिक्षा व सेवारत शिक्षा दोनों का आपसी संबंध रहना जरूरी है। सेवारत शिक्षा का पाठ्यक्रम स्कूली अनुभव व अध्यापकों की सुविधा व विचार–विमर्श पर बनाना चाहिए। सेवारत शिक्षा के लिए उच्च स्तर पर कोई जिम्मेदार संस्थान होना चाहिए। अभी तक तदर्थ आधार व अनियमित प्रारूप में सेवारत शिक्षा चल रही है। राज्यों की एस.सी. आर.टी., ड्राईट, एन.सी.ई.आर.टी., न्यूपा, शिक्षा विज्ञान इत्यादि के

कार्यक्रमों का सेवारत शिक्षा नियमित हिस्सा होना चाहिए। सेवारत शिक्षा के कार्यक्रमों का पृष्ठपोषण (फीडबैक) लेना चाहिए, इन्हें और ज्यादा उत्साहवर्द्धक व व्यावहारिक बनाया जा सके। इसके प्रशिक्षण में सैद्धांतिकता के बजाय स्कूली वातावरण की व्यावहारिक समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। सेवारत शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी, समसामयिक समस्याएं, शैक्षिक शोध, अध्यापक विकास इत्यादि पर ध्यान देना चाहिए। सेवारत शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रम लेक्चर विधि व्याख्यानों से भरे न होकर विचार–विमर्श पर आधारित होने चाहिए।

8. सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी को अध्यापक शिक्षा में अंतर्निहित प्रक्रिया के तौर पर अपनाना चाहिए। तकनीकी पैडागॉजी में खासतौर पर तीन क्षेत्र हो सकते हैं – विषयवस्तु, पैडॉगॉजी और तकनीकी। कौशल विकसित करने के लिए सामान्य जानकारी छात्र अध्यापकों को दी जाए, जिसमें प्रतिदिन की जिंदगी में इसे प्रयोग कर सके। इसमें विभिन्न सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर का शिक्षा प्रक्रिया में प्रयोग सिखाना चाहिए। छात्र–अध्यापकों के शिक्षण विषय में भी इसे अंतर्निहित किया जा सकता है, जिससे वह इसे कक्षा आधारित स्रोत बनाकर शिक्षण की विभिन्न तकनीकों में इसे प्रयोग कर सकता है। शिक्षक–शिक्षा में प्रयोगात्मक पहलुओं में भी इसे शामिल किया जा सकता है। पाठ–विकास, दत्त कार्य के निर्माण में इनको शामिल करने पर जोर दिया जा सकता है। सेवा पूर्व शिक्षक एक अधिगम कर्ता, प्रबंधक, डिजायनर और शोधकर्ता होता है इसलिए हम उससे उम्मीद कर सकते हैं कि वह अपनी गतिविधियों में इसे शामिल करे और प्रशिक्षण प्राप्त करे। अंतर्निहित पहलुओं से हम शिक्षण में कौशल विकसित कर सकते हैं।

9. अध्यापक शिक्षा में समग्र संबंधी अंतर्निहित दृष्टिकोण होना चाहिए, जिसमें ज्ञान, विश्वास, खुलापन, कौशल, उत्तरदायित्व, शिल्पकारी,

ईमानदारी, समझ, स्वयं अधिगम, समूहात्मक अधिगम, नम्रता, सामाजिक सरोकार, स्वायत्तता, शारीरिक, मानसिक, आत्मीय विकास, नेतृत्व, मेहनती, लगनशील, रिस्क उठाने वाला समग्र अध्यापक शिक्षा की विशेषताएं हैं। अधिगमकर्ता और अधिगम केन्द्रित वातावरण, जीवन की परिस्थतियों द्वारा अधिगम, अधिगम की स्वतंत्रता, सामूहिक जुड़ाव, विचारों व अनुभवों का आदान–प्रदान, अनुभवों पर ज्यादा ध्यान देना, संवाद एक महत्वपूर्ण उपकरण, शिक्षण व अधिगम का अंतर्निहित दृष्टिकोण, सिद्धांत की बजाय प्रायोगिक, सर्वांगीण विकास शामिल हो।

10. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के पास एक आदर्श स्कूल की भी कमी है। आजादी के पहले व बाद में भी शिक्षा आयोगों व समितियों ने सुझाया है कि शिक्षक–शिक्षा संस्थानों के पास विभिन्न प्रशिक्षणों के लिए एक आदर्श स्कूल (प्रायोगिक) होना चाहिए। इसलिए शिक्षक–शिक्षा संस्थानों के लिए आदर्श स्कूल का होना बहुत जरूरी है। इससे अध्यापक–शिक्षकों का भी स्कूली अनुभव व वातावरण से निरंतर संपर्क बना रहेगा। छात्रा–अध्यापकों के लिए शिक्षण–अभ्यास व विभिन्न शैक्षिक प्रयोगों का प्रारंभिक ज्ञान इस तरह के आदर्श स्कूलों में मिल सकता है।

11. अध्यापक शिक्षकों की शिक्षा भी अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावित करती है। अध्यापक शिक्षकों को विद्यालयी जीवन का अनुभव सामाजिक माहौल तथा सामुदायिक आकांक्षाओं की भलीभांति जानकारी होनी चाहिए। अध्यापक शिक्षकों को शिक्षा नीति व कार्यक्रमों के निर्धारण कार्यान्वयन रणनीतियॉ तथा अनुवीक्षण कार्यक्रमों से भी संबंधित होना चाहिए। शिक्षा के वैश्विक संदर्भ को भी ध्यान में रखना चाहिए। यह भी जरूरी है कि शैक्षिक विचारों के परीक्षण, विश्लेषण, विवेचन, विस्तार तथा संप्रेषण की क्षमता भी उनमें होनी चाहिए। इस तरह अध्यापक शिक्षक राष्ट्रीय

आवश्यकताओं के साथ शिक्षा, शैक्षिक अनुसंधान, संचार प्रौद्योगिकी तथा नवाचारी, पाठ्यक्रम विकास इत्यादि को भी ध्यान में रखना आज के युग में जरूरी है। अध्यापक शिक्षा संस्थाओं की विशिष्ट समस्याओं पर ध्यान देने तथा अध्यापक शिक्षा को अधिक उत्तरदायी तथा अनुक्रियात्मक बनाने की भी आवश्यकता है। इसलिए अध्यापक शिक्षकों को व्यावसायिक विकास के लिए भी प्रोत्साहित करना है।

12. शिक्षक–शिक्षा से जुड़ी उच्च प्राधिकार सत्ताओं का आपसी समन्वय होना जरूरी है। एन.सी.टी.ई., दूर शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के क्षेत्रीय केन्द्र, यू.जी.सी., राज्य स्तरीय संस्थान इत्यादि के बीच समन्वय होना जरूरी है। राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसी नीति व प्रारूप बनाना जरूरी है, जिससे अध्यापक शिक्षा संस्थानों की गुणात्मकता व मान्यता संबंधी सही जांच व परख हो सके। प्राधिकार सत्ताओं द्वारा प्रबंधात्मक विकेन्द्रीकरण भी किया जाना चाहिए, जिससे ज़मीनी स्तर की शिक्षक–शिक्षा से जुड़ी समस्याओं का पता चल सके और इससे शिक्षक–शिक्षा में पारदर्शिता भी बढ़ेगी।

13. वर्तमान में दूरस्थ माध्यम द्वारा अध्यापक शिक्षा व्यापक स्तर पर दी जा रही है। शिक्षक शिक्षा के उद्देश्यों के मद्देनजर, प्रवेश परीक्षा, संचालनात्मक व्यवस्था, स्वयं अधिगम सामग्री, सूचना तकनीकी द्वारा उपलब्ध सामग्री व सुविधाएं, अभ्यासात्मक कार्य व दत्त कार्य बनाने चाहिए। दूरस्थ माध्यम द्वारा अच्छी शिक्षक–शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की पुनरीक्षा, अच्छा संगठन व प्रशासन, शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग और शिक्षण शास्त्रीय उपागमों का विकास इस संदर्भ में होना चाहिए। दूरस्थ माध्यम के विद्यार्थियों को बुनयादी सुविधाओं का ज्ञान देना जरूरी है जो कि मुखाभिमुख तौर पर होना चाहिए, जिससे दूर शिक्षा की सुविधाओं का भरपूर उपयोग विद्यार्थी कर सके। दूरस्थ माध्यम में शिक्षक कार्यक्रम में नियमित अनुशासन,

संपर्क कक्षाएं, दत्त कार्य, अभ्यास कार्य, स्कूल के प्रायोगिक इत्यादि में आवश्यक उपस्थिति व अच्छे प्रदर्शन को सफलता का आधार बनाना चाहिए। दूरस्थ माध्यम द्वारा विद्यार्थी केवल डिग्री लेना ही अपना उद्देश्य न समझे बल्कि इसे अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों के आधार पर नियमित अनुशासन से इसे पूरा करें। ग्रामीण विद्यार्थियों की बाध्यताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए।

14. मूल्य शिक्षा को भी अध्यापक शिक्षा में अंतर्निहित किया जाना चाहिए। कोठारी कमीशन (1964–66) ने सुझाया है कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सृजनात्मकता की पहलों के साथ सामाजिक सेवा की इच्छा को कार्य अनुभव के द्वारा सामान्य शिक्षा में शामिल करना चाहिए। 1986 की शिक्षा नीति ने भी अध्यापकों का स्तर और उनका सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ में सामाजिक मूल्यों के दृष्टिकोण पर ध्यान केन्द्रित किया है। छात्र अध्यापकों को दिमाग, शरीर, बुद्धि और संवेगों के समग्र विकास का अधिगम अनुभव देना जरूरी है। इसलिए छात्र अध्यापकों को भी मूल्य आधारित शिक्षा देनी चाहिए। सूचना व संप्रेषण के युग में तेज गति के समाज में रहते हुए मूल्यों पर आज ध्यान विभिन्न संदर्भों से होना जरूरी हो गया है। सार्वभौमिकता व वैश्विकता को भी ध्यान में रखकर अध्यापक शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा को अंतर्निहित करना चाहिए।

सन्दर्भ –

1. भट्टाचार्य, जी0सी0 : अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2014
2. किशन, एन0आर0 : ग्लोबल ट्रेन्ड इन टीचर एजूकेशन, ए0पी0एच0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, 2007
3. अग्रवाल, बी0बी0 : आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1996
4. जौहरी, प्रिया : भारत में शिक्षा पर वैश्वीकरण का प्रभाव Pratibha

Research Journal of Humanities, प्रतिभा प्रकाशन इलाहाबाद, वर्ष 8 अंक 2, जुलाई–सितम्बर 2016

5. नन्द गैरंग चरन : मिश्रा प्रदिप्ता कुमार प्रोफेशनल डेवलपमेन्ट ऑफ टीचर्स, एजुट्रैक, वर्ष 9, अंक 6, फरवरी 2010
6. वी0एन0 वगीज : ''भूमण्डलीकरण, आर्थिक संकट और उच्च शिक्षा का विकास'' परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष 17, अंक 1, दिसम्बर 2010
7. अश्वनी : अध्यापक शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन, परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष 17, अंक 2, अगस्त 2010
8. शाह क्रान्ति हिन्द स्वराज एक अध्ययन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन।
9. रंजन, प्रेमनाथ : भूमण्डलीकरण नीति और नियति।